रविवार, दिनाँक **10-03-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरे सामने दर्शन है , मेरा साजन दर्शन है।

यह तो कभी भी छिपता नहीं है।

यह तो कभी भी मिटता नहीं है ।।

हर दम दिखता रहता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह तो कहीं से आता नहीं है।

यह तो कहीं भी जाता नहीं है ।।

हर अन्दर सजता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

इस की तो है शान निराली।

चारों ओर है जिसकी लाली ।।

कैसा सुन्दर लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

जनचर बनचर है इसके सवाली।

सजनों यह है सतवस्तु का वाली ।।

चतुर्भुजधारी लगता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

अजर अमर है अडौल निश्चल ।

सबका है यह मालक पालक ।।

बेअन्त बेअन्त कहलाता है ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

यह दर्शन तस्वीर नहीं है ।

यह दर्शन तो शरीर नहीं है।।

यह दर्शन है अपना आप।

ज्योति स्वरूप है ब्रह्म प्रकाश ।।

इसका ही सजनों करना जाप ।

मेरे सामने दर्शन है, मेरा साजन दर्शन है।।

सजनों हमें केवल कीर्तन गाने तक ही सीमित नहीं रहना अपितु हमें तो इसमें विदित संदेश को वर्ताव में लाना है। इस संदर्भ में सजनों यथार्थ में हमारी सुरत हर क्षण अपने साजन के दर्शन में लीन रहे और 'विचार ईश्वर है अपना आप', के भाव से जगत में विचरने के काबिल बने, उसकी बहुत ही सहज और सरल युक्ति सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित की गई है। आपकी जानकारी हेतु वह युक्ति है - अपनी सुरत को आद् अक्षर यानि शब्द में लीन रखो। ऐसा करने से सहज ही सुरत को साजन प्रभु के दर्शन होते रहेंगे। यहाँ से तात्पर्य प्रभु का संग प्राप्त करने से हैं। जानो साजन प्रभु का संग प्राप्त करने पर इन्सान परिपूर्ण हो जाता है। ऐसा इन्सान परिपूर्णता से इस जगत में विचरते हुए आत्मोद्धार के साथ-साथ जगत उद्धार सिद्ध करने में भी कामयाब हो जाता है और ए विध् वह परोपकार प्रवृत्ति इन्सान निश्चित रुप से अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाता है। सजनों यह सर्वोत्तम प्राप्ति है। अतः अगर इस जीवन में कुछ प्राप्त करने की चाहना है तो अपना ख़्याल-ध्यान इधर स्थिर कर दो और प्रकाशमय अवस्था में आकर जीवन का सत्य जान लो। फिर सत्यतापूर्ण जगत में निष्पाप विचरने के काबिल बन परमात्मा के सुपुत्र कहलाओ। जानो सभी सुरतें सुपुत्र बनकर उन श्री साजन प्रभु की गोदी में खेल सकती हैं क्योंकि हर सुरत में वही सूरजों का सूरज प्रकाशित है। इस संदर्भ में मानो कि अगर वह प्रभु हैं तो ही सुरत है, अगर वह नहीं तो सुरत का कोई अस्तित्व ही

नहीं। अतः समरसता से बने रहते हुए अपनी वास्तविक इलाही शान को प्राप्त करने के लिए अपने सजन बनो और इस युक्ति को अपनाने में विलम्ब मत करो क्योंकि जीवन समाप्ति की ओर जा रहा है। इस सत्य को समझो कि हर क्षण जो व्यतीत हो रहा है वह जीवन को समाप्ति की ओर ले जा रहा है। ऐसा मत सोचो कि हम बड़े हो रहे हैं अपितु यह विचार करो कि जीवन का अनमोल समय व्यर्थ जा रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों यह कोई कठिन युक्ति नहीं है। इस हेतु केवल और केवल अपने ख़्याल को जो संसार में उलझा हुआ है, यकदम समेटकर अन्तर्मुखी बना लेना है। ऐसा सुनिश्चित होते ही पता लग जाएगा कि सत्य अन्तर्घट में ही शोभित यानि प्रकाशित है। बाहर तो सब झूठ है, माया है, नश्वरता है। अतः सजनों संकल्प लो कि मैं नश्वर होकर अपना जीवन कदापि वृथा नहीं गंवाऊँगा यानि मानव चोले में जो जीवन उद्धार हेतु अनमोल अवसर प्राप्त हुआ है, उस मौके को मैं हाथ से नहीं जाने दूँगा। इस प्रयोजन में सफल होने हेतु अपने ऊपर अंकुश व आत्म-नियन्त्रण रखो यानि माया की शोखियाँ देखकर बहक मत जाओ। बहकता तो वही है जो अपने होश-ओ-हवाश खो बैठता है और जिसके सिर पर संसार को प्राप्त करने का नशा चढ़ जाता है। निश्चित ही हर वक्त संसार को प्राप्त करने की क्रिया में रत रहने वाला ऐसा सजन खुद तो विनाश को प्राप्त होता ही है, साथ ही अपने संगी-साथियों को भी ले डूबता है क्योंकि वह उनको भी उसी रास्ते पर प्रशस्त करता है। सजनों फिर कह रहे हैं कि इतने निर्दयी मत बनो। परमार्थ के रास्ते पर खुद मज़बूती से बने रहते हुए अपने बच्चों को भी प्रेरित करो और चैत्र के यज्ञ तक सद् परिणाम प्राप्त कर लो ताकि वह सब यहाँ पर हाज़िर हों। ज्ञात हो कि जो पारमार्थिक ज्ञान चैत्र के यज्ञ पर प्राप्त होने वाला है, उस ज्ञान को जो भी सजन स्मृति में रखकर आत्मसात करेगा, वह परिपूर्णतया आत्म-विश्वास के साथ निष्पाप जीवन जीने के योग्य बन जाएगा। अतः इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सभी संकल्प-विकल्पों से आज़ाद होकर ही यहाँ आना यानि कोई भी घरों का फुरना लेकर यज्ञ पर मत आना। इस विषय में हम तो यही कहेंगे कि जिस कार्य हेतु हमें यह जन्म मिला है, उस कार्य की सिद्धि के निमित्त यानि जन्म की बाज़ी को जीतने के काबिल बनने के लिए एक-एक शब्द जो भी यज्ञ पर बुलेगा, उसको धारण करके अमल में लाने के योग्य बनना।

घबराओ मत सजनों अपितु केवल चार दिन दुनियाँ की तरफ से ख़्याल हटाकर परमार्थ के निमित्त समर्पित कर दो और परिवारों को भी अपने संग ले लो यानि बिखरकर मत रहो। ऐसा न हो कि परिवार का कोई सदस्य स्वार्थ की ओर जा रहा है और कोई परमार्थ की ओर जा रहा है। इस तरह माता-पिता को दिखायी ही न दे रहा हो कि मेरा बच्चा बिगड़ रहा है, अतः उसको सुधारने का प्रयास अभी से कर लूँ। जानो सजनों यदि आपके बच्चे एक बार बिगड़ गए तो आदत से मज़बूर हो जाएंगे। फिर वह किसी भान्ति भी सम्भल या सँवर नहीं सकेंगे। अतः सजनों जो युक्ति बताई गई है उसे

अपनाओ यानि हमारी सुरत जिसकी है, उसी के प्रति ही समर्पित रहे। इस तरह सजनों जो शहनशाहों के शाह हैं उन के संग बने रह सुरत शहनशाही ठाठ से अपने घर में विचरे।

इस सन्दर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि यदि अपनी सुन्दरता इस शरीर रूपी लिबास से मानते हो तो कोई बात नहीं परन्तु केवल यहाँ तक ही सीमित न रहो अपितु अन्तर्घट की सुन्दरता की तरफ भी ध्यान दो। याद रखो कि अगर अन्तर्घट की सुन्दरता नहीं है तो कोई भी सजन आपसे बात करना पसन्द नहीं करेगा और न ही कोई आपके पास बैठना पसन्द करेगा। जो आपके पास बैठेगा भी, वह कामी होगा, किसी न किसी कामना की सिद्धि हेतु साथ बैठा हुआ नज़र आयेगा। अतः इस खेल में मत उलझो अपितु इस खेल को समझकर यानि कलुकाल से सम्बन्ध-विच्छेद कर सतवस्तु की संस्कृति को आत्मसात् करो और सुसंस्कृत होकर गुणी इन्सान बन जाओ। हम तो सजनों कह ही सकते हैं पर करना तो आपको खुद को ही है। फिर कह रहे हैं कि यज्ञ पर सारे इकट्ठे आना। ऐसा करने से आपको बहुत अच्छा लगेगा और कोई फुरना भी नहीं सताएगा क्योंकि अफुर-अवस्था आपकी ग्रहण शक्ति को ताकतवर बन जाएगी। अब ऐसा ही ताकतवर इंसान बनने हेतु मिल कर जयकारा लगाओः-

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की विजय, विजय, विजय

महाबीर जी दे चाह दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार मुहब्बतां लांवदा ए, दासी दा दिल घबरांवदा ए।

इन्हां विच न मैं मुहब्बत लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए संसार दे विच फसांवदे नी, आपे आपे ही प्रीतां पए लांवदे नी।

इन्हां कोलों बली निर्लेप राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार समुन्द्र डरांवदा ए, भैणां नूं तरना न आंवदा ए।

रघुनाथ जी दे मन्दिरां विच मैं जावां, संसार दे विच न फस जावां।।

सानू नाम दा जादू पा दे बली, रघुनाथ जी दे घर पहुंचा दे बली।

चित्त रघुनाथ जी दे चरणां दे विच लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

महाबीर जी रस्ता बताया ए, रघुनाथ जी दे चरणीं बिठाया ए।

दिन रात मैं सेवा दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए मन किसे पासे न जावे, हरदम सांवले चरणां दे विच राहवे।

रघुनाथ महाबीर जी दा दीदार पावां, संसार दे विच न फस जावां।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दर्शन देंदे रहणा बलधार जी ए।

कई सूरजां दा सूरज मै देखदी राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

सजनों जब इस सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सब कुछ विदित है, तो फिर क्यों कर हम वर्तमानकालीन दूषित स्वभावों से ऊपर नहीं उठ पा रहे? क्यों हमारा ख़्याल नीचे फँसा पड़ा है? क्या हम समझें कि ऐसा इसलिए हुआ पड़ा है क्योंकि हमारा संग उन कुसंगियों के साथ हो गया है, जिन पर युगों के भ्रमित ज्ञान का कुप्रभाव है?

मौन।

सजनों अब जब युग परिवर्तन की कगार पर खड़ा है यानि सतयुग आने वाला है तो हमें अक्ल आ जानी चाहिये। अतः अब युगों-युगांतरों के भाव-स्वभाव अनुसार हमें अपना स्वाभाविक स्वरूप नहीं बनाना क्योंकि यह नुक्सानदायक है। इस नुकसान को हमने त्रेता-द्वापर में देखा, और अब कलियुग में तो इसकी इन्तहा हो गई है। इसी भयावह परिस्थिति के कारण ही आज का इन्सान हर क्षण काँप रहा है क्योंकि कोई पता नहीं कि कब क्या हो जाये। इस दुःखद परिस्थिति से बचाने हेतु ही सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जीवन के यथार्थ से हमारा परिचय करा रहा है और यह समझा रहा है कि हे मानव जान, आकाशों आकाश, बिन सूरजों प्रकाश है। इस समय जहाँ आप हो वह भू-मण्डल है तथा इससे नीचे पाताल-लोक है। इस भू-मण्डल में रहते हुए सजनों इन्द्रियरस में फँस कर हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारयुक्त स्वभाव अपना लिए हैं जिसका सीधा सा अर्थ है कि हम मध्य में स्थित भूमण्डल से नीचे की ओर जा रहे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि काम वासना हमें मानसिक तौर पर शनैः शनैः नीचे यानि अधोपतन की ओर धकेल रही है और इस अवस्था से ऊपर उठने की शक्ति हम में नहीं है। आशय यह है कि जिसके मन-मस्तिष्क पर कामुकता हावी हो जाती है, उसका ख़्याल मनुराज में फँस नीचे की ओर भोग-विलास में धँसता ही धँसता है। इसके विपरीत अगर हमारा मन ऊपर अपने स्वरूप में लीन रहता है तो हमारा ख़्याल ऊपर उठ जाता है।

इस संदर्भ में सजनों यदि आप आद् अक्षर ओ३म् हृदय में चलाओगे तो आपको अपना ख़्याल ऊपर उठता हुआ महसूस होगा और लगेगा कि अब यह प्रभु में लीन होकर अपने घर में स्थित होने जा रहा है। ऐसा होने पर सजनों ब्रह्मसत्ता को ग्रहण करना सहज हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। अब जब मन-मन्दिर में ब्रह्मसत्ता प्रवेश करती है तो आत्मिक ज्ञान स्वतः ही हमारे हृदय में प्रकाशित हो रहा है। इसके विपरीत ब्रह्मसत्ता की कमी के कारण ख़्याल नीचे चला जाता है। ऐसे अस्थिर मानसिकता वाले मन्दबुद्धि इन्सान को तो कोई भी पशु की भान्ति हाँक कर कहीं भी ले जाता है। इस तरह वह परवश हो बरबादी के रास्ते पर चढ़ जाता है और उस अधोपतन से उबरने का फिर उसे कोई रास्ता ही नहीं सूझता। ऐसे में वह कैसे संसारी बन्धनों को तोड़ अपने सच्चे घर पहुँच सकता है? आप ही बताओ सजनों, अपना शहनशाही घर छोड़कर इच्छाओं के अधीन हो जाना, क्या यह कोई समझदारी की बात है?

'नहीं जी'।

तो फिर आप क्योंकर इस गर्त में ऐसे फँसे पड़े हो कि बार-बार झकझोरने पर भी बुद्धि टिकाणे नहीं आ रही?

इस संदर्भ में सजनों आपकी अक्ल टिकाणे आ जाए और आप सभी जीवों में से मानव रूप में जो विशेषता आपके पास है, उसे जान-समझ सको, उसके लिये ही चैत्र के यज्ञ पर पूरी बात होनी है। अतः यज्ञ पर सब आना ताकि आपको अपनी विशेष शक्ति से परिचित कराया जा सके। यकीन मानो सजनों ईश्वर प्रदत्त विवेकशक्ति के क्षीण होने के कारण ही मारे-मारे फिर रहे हो और जो जिधर चलाता है उधर चल पड़ते हो। उन्हें मना करने की हिम्मत ही नहीं पैदा होती। इसी प्रकार बच्चे माता-पिता के अधीन हो गये है, माता-पिता समाज के अधीन हो गए हैं और कुकर्मी-अधर्मी इस स्थिति का लाभ उठा रहे हैं तथा हम जाल में फँसे फड़फड़ा रहे हैं। ऐसे में उत्तमता कहाँ पर निहित है, यह हम जान ही नहीं पा रहे। इस संदर्भ में सजनों जानो और मानो कि उत्तमता तो सत्संग के वातावरण में है, न कि घर के वातावरण में। इस वातावरण के प्रभाववश ही आप सचेत बुद्धि इंसान बन सकते हो अन्यथा तो आप अचेतन ही रहोगे। इस अचेतनता वश आपके साथ कोई भी कुछ भी कर जाएगा और आप चूँ तक करने की हिम्मत नहीं जुटा सकोगे।

इस परिप्रेक्ष्य में हम यह देख कर हैरान होते हैं कि कुदरत द्वारा समर्थता बख़्शे जाने के बावजूद भी आपने अपना जीवन इतना संकटमय क्यों बना लिया है? इस विषय में सजनों विचार करो और कुदरत के नीति-नियमों के अधीन हो जाओ। याद रखो कुदरत का हर नीति-नियम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित है अतः इन नियमों की पालना कर ऊपर उठने का पुरुषार्थ दिखाओ। इस हेतु सतवस्तु के

कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को धारण करो और मनुराज से ऊपर उठ सशक्त हो जाओ। इस तरह सब फुरनों से आज़ाद हो अपने साम्राज्य में जहाँ शान्ति है, स्थिरता है, पावनता है, निर्मलता है, शान है, वहाँ प्रवेश कर जाओ। जानो ऐसा सक्षम बनने पर ही सतयुगी इन्सानों की भांति आपकी वृति-स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना बाना निर्मल हो पाएगा और आप सुखी हो जाओगे। सजनों ऐसा बनने के लिये मेहनत तो करनी पड़ेगी। याद रखो संसार को इकट्‌ठा करने के प्रति मेहनत करना बेकार है क्योंकि त्रिलोकी के राज के सामने यह संसार बेकार है। अतः इस राज को प्राप्त करने हेतु कुल त्रिलोकी को जहाँ से समरस प्रकाश प्राप्त हो रहा है, उस सम के भाव को मन में उतारो। ज्ञात हो कि जो त्रिलोकी में सर्व-व्यापत ईश्वर की रमज़ को जान जाता है, वह मन से आज़ाद हो अपने स्वरूप को पा जाता है।

आप भी सजनों इस स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने हेतु चैत्र के यज्ञ पर सपरिवार जरूर आओ। जानो यदि ऐसा न किया तो फिर रोते हुए आओगे। आपको ऐसे रोते हुए न आना पड़े, इस हेतु अच्छी खरीद करो और हँसते हुए आओ। इस तरह सजनों वास्तविक रूप से अमीर बनो, दिखावे के नहीं। जानो दिखावे की अमीरी अहंकार प्रवृत्ति में ढालती है, अतः ऐसी अमीरी पर तो लानत है जो इन्सानियत से गिराती है। आपके साथ ऐसा न हो इस हेतु इन्सानियत में बने रहो क्योंकि इन्सानियत ही हमारा धर्म है। इस संदर्भ में सच्चेपातशाह जी भी कहते हैं कि 'धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर सजनों तन-मन-धन सब वारना रे'। अब ध्यान से आगे सुनोः-

(श्री महाबीर जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

राम रटन ओथे लग रही लगे सारे लोक।

लोक लगे परलोक लगे, रटन एहो श्लोक, ओ ओ ओ ओ ओ।।

हो गई बख्शीश उस दयालु बख़्शन्द दी, हो गई बख्शीश।

हो गई असीस उस आनन्द कन्द दी, आनन्द कन्द दी।।

शेष ते विराजमान, सैन करो विश्रामी पलंग।

निर्वाण दे अन्दर जोत ओ चमके, चमके सर्व ही अन्दर, चमके सर्व ही अन्दर।।

निर्मल तेरी ओ जोत साजन, निर्मल ही निर्वाण हुआ।

निर्मल आद अन्त तूं भासे, निर्मल कुल जहान हुआ, निर्मल कुल जहान हुआ।।

निर्मल वृति निर्मल स्मृति, जैं सूक्ष्म युक्ति वल ध्यान दिया।

निर्मल पा लिया बाणा उसने अपना आप पहचान किया, ओ अपना आप पहचान किया।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

इन्सानां विच वसदा दिसदा हां, खावां पीवां खिड़ खिड़ के पिया हसदा हां।

एहो मन विच करो विश्वास सजनों मेरी सुन लौ बात, सजनों मेरी सुन लौ बात।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

सतवस्तु दी निर्मल बुद्धि उच्च्य बुद्धि कहाई।

निर्मल बुद्धि, निर्मल बाणी, पवित्र रचना दिखाई, साजन जी पवित्र रचना दिखाई।।

सतवस्तु दा बगीचा देखो कैसी सुगन्धि आई।

चार वेद छः शास्त्र समझ न सकन, कैसी पदवी पाई,साजन जी ने कैसी पदवी पाई।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

जीव जन्तु में भासदा जापदा, एह मेरा समझो इतिहास।

जड़ चेतन में मेरा प्रकाश, सजनों मेरी सुण लौ बात, सजनों मेरी सुण लौ बात।।

ध्वनिः-

सजनों मेरी सुण लौ बात, दुनियां तों राहवो आज़ाद।।

सजनों दुनियाँ से आज़ाद रहने का मतलब यह नहीं कि घर-बार छोड़कर कहीं चले जाओ अपितु इससे आशय है कि आप अपना फ़र्ज अदा पूरी अफुरता व समर्थता से हँसकर निभाओ। इस संदर्भ में याद रखो, जहाँ समर्थता होती है, वहाँ समझदारी भी होती है। समझदारी से वही सजन अपना फ़र्ज अदा हँसकर निभा सकता है जिसके पास स्वयं का ज्ञान होता है यानि जो जीव-जगत की रमज़ जानता है। कलियुग का प्रत्येक मानव ऐसा बनने में समर्थ यानि सक्षम हो उसके लिए ही सजनों

कुदरत ने सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आप सबको प्रदान किया है। सजनों यह कुदरती ग्रन्थ वास्तव में हम जीवों के ऊपर कुदरत की अपार मेहर का प्रतीक है। अतः कुदरत की इस मेहर को स्वीकारो और अपने सब दुःख-दर्द मिटाओ। जानो ऐसा करने से आपका ख़्याल दुनियाँ से आज़ाद होकर अपने सच्चे घर में स्थित हो जाएगा। ऐसा हो गया तो फिर आपके अन्दर वहाँ से बाहर निकलने की इच्छा ही नहीं पैदा होगी क्योंकि वहाँ की सत्य बात आपको अच्छी लगेगी। बात अच्छी लगेगी तो फिर मन में सत्य विचार ही चलेंगे और संकल्प-विकल्प उठने की कोई गुंजाईश ही नहीं रहेगी। याद रखो सजनों संकल्प-विकल्प तो उस मन में उठते हैं जहाँ सद्-विचार नहीं होते। सद्-विचारों का न होना अज्ञानमय अवस्था का प्रतीक होता है। ऐसे अज्ञानी को तो कोई भी जन्जीरों में बांध कुरस्ते चढ़ा देता है यानि कोई भी उसे धर्म हारने पर मजबूर कर देता है। सजनों आज यही हुआ पड़ा है। सभी अज्ञानमय अवस्था में उलझे पड़े हैं। इस सन्दर्भ में सजनों आपके साथ ऐसा न हो यानि आप कलियुगी भाव स्वभावों से पलटा खा पुनः सत्यज्ञानमय अवस्था में आ जाओ, इस हेतु कुदरत ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में आपके लिए पूरी व्यवस्था कायम कर रखी है। इस व्यवस्था के दृष्टिगत सजनों हमें, आपको व कुल संसार को कुदरत का आभारी होना चाहिए। जानो सजनो यह कुदरती वाणी आपकी अन्दरुनी वृत्ति को संकल्प-विकल्प से मुक्ति दिलवा पुनः आनन्दमय अवस्था में साधे रखने में पूरी तरह से सक्षम है। अतः दुनियाँ के विचार मन में ठहराने के स्थान पर इसमें विदित विचारों को अपने मन में ठहराओ। ऐसा करने से यानि इन सद्-विचारों को मन में ठहराने से सदा सन्तुष्ट व शान्त बने रहोगे क्योंकि मन को उसकी मनपसन्द खुराक मिलती रहेगी। यकीन मानो सजनों, इसके अतिरिक्त आप जो भी अपने मन को दोगे उससे वह अशान्त और असन्तुष्ट हो नाराज़ होगा ही होगा। फलतः वह आपका साथ कभी नहीं देगा और बदले में आपकी बुद्धि का हरण कर उसे नीचे ले जाएगा। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मन को शब्द ब्रह्म विचारों द्वारा सदा साफ रखो। याद रखो तनिक सी भी मलिनता यथार्थ से अपरिचित करा देती है क्योंकि मलिनता अन्धकार का नाम है। यदि मन-मन्दिर में अन्धकार होगा तो यथार्थ में आत्म-दर्शन नहीं होगा। आत्म-दर्शन नहीं होगा तो हमें भरमाकर कोई किधर भी ले जायेगा यानि आज जो गुरु बने बैठे हैं, वे हमें अपने में उलझा लेंगे और हम पागलों की तरह उनके पीछे भागते रहेंगे। इस तरह इस मन-मन्दिर रूपी घर में जो वस्तु है, उसका अध्ययन करने में असमर्थ रहेंगे और बुद्धिहीन जीव कहलाएंगे। यही सजनों आज हो रहा है यानि बुद्धिहीन गुरु जीवों को तरह-तरह के ढंग लड़ाकर फँसा रहे हैं। यकीन मानो इससे आपकी किसी तरह की कोई सिद्धि नहीं हो रही अपितु इससे तो केवल फँसाने वालों का मतलब सिद्ध हो रहा है। सजनों इससे साबित होता है कि दुनियाँ मतलब की है और यह सब मतलब के यार हैं जो स्वार्थपूर्ति हेतु हमसे कुछ भी करवा सकते हैं।

इस सन्दर्भ में जानो कि जो पदवी श्री साजन जी ने पाई वह शब्दातीत है, कालातीत है व सर्व शक्तिमानता तथा सर्व-व्यापकता का प्रतीक है। यह त्रिलोकी के मालिक होने का एहसास है यानि उच्ची शान को प्राप्त होने की बात है। इस संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि यह 'ईश्वर

है अपना आप’ इस सत्य का बोध है। सजनों जब इस सत्य का बोध हो जाता है तो आप ही बताओ कि वह सजन किसके आगे शीश झुकाए या किसको मजबूर करे कि मेरे आगे शीश झुकाओ। मानो ऐसा करना या कराना अपने आप में बहुत बड़ा गुनाह है, धोखा है, पाप है। इस पापमय अन्धकार को मिटाने के लिए ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने ‘शब्द है गुरु, शरीर नहीं है’ इस सत्य से सबको परिचित कराया। इस परिचय उपरान्त भी यदि हम उस शहनशाह की सत्य बात को अस्वीकार कर, झूठ की तरफ भागें तो यह अपने आप में मौत खरीद करने की बात है। इस मरण से फिर पीड़ा तो होगी ही होगी। सजनों यह दुःख आपको व आपके परिवारजनों को न भोगना पड़े, उसके लिए ही यज्ञ पर सारी बात होनी है। इसी के साथ अगले इतवार यानि दिनाँक १७ तारीख २०२४ को भी एक मीटिंग बुलाई है। इस मीटिंग में ४०-४५ साल तक के सभी युवाओं ने आना है। यह मीटिंग ध्यान-कक्ष की क्लास के बाद होगी और पाँच बजे के पाठ तक समाप्त हो जायेगी। सजनों यह आपके पास सुनहरी मौका है, जीवन उद्धार की ओर बढ़ने का। ज्ञात हो कि यह मीटिंग परिवार के हर सजन के लिए है, अतः सब जगह से सजन आ सकते हैं। अब बताओ कि आप में से इस मौके का कौन लाभ उठायेगा?

‘सभी ने हाथ खड़े किये’।

तो फिर कोई भी सजन घरों में नहीं रहना चाहिए। ठीक है?

‘हाँ जी’।

जानो यदि परिवार मिलकर बैठा होगा तो असीम आनन्द आएगा जिसे देखकर हमें भी अच्छा लगेगा क्योंकि एक दर्शन समक्ष होगा। तब हमें यह आभास होगा कि अब मानव जाति के मन में कलुकाल के भाव-स्वभाव छोड़ सतयुगी भाव-स्वभाव अपनाने की चेष्टा पूरी तरह से उत्पन्न हो गई है। फिर ऐसे ही सजनों को चैत्र के यज्ञ पर ज्ञानमय अवस्था में लाने का भरपूर प्रयास किया जाएगा ताकि यह भौतिकवाद से ऊपर उठ परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से बने रहना सहज स्वीकार लें और अपना जीवन बना मोक्ष को प्राप्त कर लें। अब आगे ध्यानपूर्वक सुनना और यज्ञ पर आने का निमन्त्रण सबको देना।

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

गरुड़ खड़ा घूकरां मारे, गरुड़ खड़ा घूकरां मारे।

हम भी चलेंगे तुम भी चलोगे, चलना है विच दरबारे।

शक्ति लक्ष्मी संग चलनगे, नाल चले बलधारे, गरुड़ खड़ा घूकरां मारे।।

दरबार में ही पहुँचदियां, ओथे कैसा लगा है दीवान।

पब्लिक हथ जोड़ करे चरण वन्दना, कोटि कोटि प्रणाम।

कैसी है सूरत आप दी सज रही महान।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

महाराज जी दे जन्म उत्ते सजनों सब कोई आवो।

कोई न राहवो घर विच बाकी, दयालु दा जन्म मनाओ।

दयालु है ओ सब दा सांझा, इन्सानों जपो ते पावो।।

कई सजन बेसमझी विच आ के कैसे बोलन ओ बोल।

घर विच खर्च बहुतेरा है, यज्ञ ते किस तरह जाऊँ।

ओ साजन जी पैसा नहीं साडे कोल।।

ओ है अजन्मा, सजनों जन्म कौन मनावे।

कौन है जे मनावन वाला, कौन जन्म ते आवे।

ओ है जे एक तो फिर कौन जन्म विच आवे।।

इन्तज़ाम घरां दे कर लवो सजनों, फिर एथे नहीं कहना जे।

श्री रामचन्द्र महाबीर जी दे जन्म ते सजनों आना जे।।

हनुमान जी श्रीराम दे जन्म ते सजनों आना है।

तीर्थ करदियां कई दिन लगन, पर असां तुआनूं चार दिन टिकाना है।।

दयालु जी दे जन्म उत्ते इन्सान जेहड़ा न आवेगा।

जेहड़ा न आवेगा सजन, फिर ओही पछोतावेगा।।

पैसियाँ दा फिकर मत करो, इस यज्ञ ते आना जरूरी है।

जगत रुस्से तां रुसन देवो, भगवान रुस्से तां नहीं टिकाना है।।

शब्दः-

बात किसे दी न करियो, न करियो किसे दी गल।

सतसंग में मत बोलियो, न मचाईयो हलचल।।

सजनों इस कीर्तन द्वारा न केवल आपको यज्ञ पर आने का निमन्त्रण मिल गया है अपितु साथ-साथ यज्ञ पर आने की नियम और नीति भी समझा दी गई है। सजनों इस नियम और नीति को जो मज़बूती से अपनायेगा, वह सजन ही यज्ञ पर होने वाली बातचीत को अफुरता से समझ पायेगा। इस बात को याद रखना।

इस संदर्भ में अब सबने - सबको आध्यात्मिक क्रान्ति के तहत् भाव-स्वाभाविक परिवर्तन लाने के लिए यानि कलियुग के भाव-स्वभाव छोड़कर आत्मीयता युक्त सतयुगी भाव-स्वभाव परिपूर्णतया अपनाने के प्रति जागृति में आना है और आत्म-पहचान करनी है। आत्म-पहचान में जो आज के समयकाल में अत्यन्त आवश्यक है वह है - कुदरत प्रदत्त विशेष विवेकशक्ति जो शत-प्रति-शत इन्सानों की क्षीण हो चुकी है व जिसके बल पर इन्सान अपने घर पहुँच विश्राम को पा सकता है। यहाँ पर सजनों आपको इसी विवेकशक्ति के हर पहलू से परिचित कराया जाएगा। अतः सब जरूर आना ताकि आप आगामी वर्ष विवेकशीलता से व्यतीत करते हुए अपना जीवन लक्ष्य पाने में सफल हो सको।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।